विदूषक (मैत्रेय) का चरित्र-चित्रण
(मृच्छकटिक के आधार पर)

मृच्छकटिक में विदूषक का नाम मैत्रेय है। वह निकृष्ट ब्राह्मण कुल का है। तृतीय अंक के प्रारम्भ में वह अपना परिचय स्वयं देता है- "यथा नागानां मध्ये डुण्डुभः तथा सर्वब्राह्मणानां मध्येऽहं ब्राह्मणः।" अर्थात् जैसे सभी सांपो में डेड़हा (जल में रहने वाला सांप नाम मात्र के लिए ही सांप) होता है उसी प्रकार सम्पूर्ण ब्राह्मणों के बीच में मैं भी (नाम मात्र का) ब्राह्मण हूँ। तात्पर्य यह है कि सांप की सार्थकता जहरीला होने में है। जहर से हीन डेड़हा (डुण्डुभ) नाम मात्र के लिए ही सांप है, उसी प्रकार विद्या, तप आदि से रहित मैं मैत्रेय भी नाममात्र का ब्राह्मण हूँ।

1- **पेटू**: वह पेटू है। हर समय वह खाने की चिन्ता करता है। चारुदत्त की सम्पन्नता में वह विविध व्यञ्जनों का आनन्द लिया करता था। अब उनकी याद करके दुःखी हो जाता है। चतुर्थ अंक में वसन्तसेना का वैभव देखकर आश्चर्यचकित हो जाता है किन्तु वसन्तसेना के द्वारा केवल मौखिक सत्कार किए जाने एवं उसके द्वारा भोजन आदि के द्वारा सत्कार न पाकर वह (विदूषक) असन्तुष्ट हो जाता है। वह भोजन आदि के बिना सन्तुष्ट नहीं होता क्योंकि वह पेटू है।

2- **डरपोक**: वह भीतर से बड़ा डरपोक है। जब चारुदत्त उसे चौराहे पर ~~जाकर~~ जाकर बलि समर्पण करने के लिए कहता है, ~~तब~~ तब वह सायंकाल अकेले जाने में डरता है और इसीलिए चौराहे पर जाने से मना कर देता है। पुनः रदनिका को साथ लेकर जाना स्वीकार करता है। प्रथम अंक में ही वसन्तसेना को उसके घर पहुँचाने के लिए उसके साथ जाने के लिए कहता है, तब भी वह अस्वीकार कर देता है। जब वसन्तसेना को पहुँचाने के लिए चारुदत्त जाने के लिए तैयार होता है, ~~तब~~ तब वह भी चारुदत्त के साथ चल देता है।

तृतीय अंक वसन्तसेना के धरोहर के रूप में स्वर्णाभूषणों का भाण्ड रखने में वह डरता है किन्तु विवश होकर रख लेता है।

3- **धर्माचरण में अरुचि**: उसे धर्माचरण में रुचि नहीं है। वह देवी-देवताओं की पूजा आदि में विश्वास नहीं करता है। उसका मानना है कि पूजा आदि से कोई फल नहीं मिलता। वह सोचता है कि नियम पूर्वक पूजा-पाठ करने वाला चारुदत्त विपत्ति में क्यों पड़ जाता है? अर्थात् निर्धन हो जाता है।

Scanned with CamScanner

4- मजाकिया स्वभाव : वह मजाकिया स्वभाव का भी है। प्रथम अंक में जब वसन्तसेना शकार आदि से बचने के लिए रात में चारुदत्त के घर में अपने प्रवेश के लिए चारुदत्त से क्षमा-प्राचना करती है, तब दूसरी ओर उसे रदनिका समझकर उसके साथ दासी के समान व्यवहार करने के कारण चारुदत्त भी वसन्तसेना से क्षमा-प्राचना करता है। इस स्थिति में विदूषक भी दोनों के सामने हाथ जोड़कर दोनों (वसन्तसेना और चारुदत्त) से क्षमा-प्राचना का सुन्दर अभिनय करता है अर्थात् मजाक करता है।

5- वेश्यासम्पर्क का विरोधी : उसे वेश्या-सम्पर्क अच्छा नहीं लगता है। इसी कारण वह चारुदत्त से भी वेश्या (वसन्तसेना) का सम्पर्क तोड़ने का आग्रह करता है। उसकी दृष्टि में वेश्या मात्र कुटिल होती है। वह वेश्या-सम्पर्क का निन्दक है।

6- संगीत में असचि: विदूषक को संगीत आदि कलाओं में कोई रुचि नहीं है। रेभिल के सुन्दर गीत का भी वह आलोचना कर देता है। रेभिल के सुन्दर गाने की चारुदत्त अतिशय प्रशंसा करता है; किन्तु विदूषक रेभिल के गाने की बार बार आलोचना करता है।

7- अटूट मैत्री (मित्रता): विदूषक के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता है-चारुदत्त के साथ अटूट मैत्री। वह अपनी मित्रता की कसौटी पर सदैव खरा रहा है। उसने कभी भी कोई ऐसा व्यवहार नहीं किया है जिससे मित्रता पर कोई दोष लगे। वह चारुदत्त की सम्पन्नता के समय उसके घर पर अनेक प्रकार के व्यंजनों का स्वाद लिया करता था किन्तु बाद में चारुदत्त के अतिनिर्धन हो जाने पर भी वह उसका (चारुदत्त का) साथ नहीं छोड़ता है। इधर-उधर से अपने भोजन की व्यवस्था करके रात में विश्राम के लिए चारुदत्त के घर पर ही आता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि विदूषक एक सच्चा मित्र, बुद्धिमान साथी और हर परिस्थिति में साथ निभाने वाला सहयोगी दिखाई देता है। वह केवल हँसी या मजाक का पात्र नहीं है। मृच्छकटिक के कथानक-संयोजन में उसने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

Scanned with CamScanner